

बावलापन पुं. (तद्.) उन्मत्तता, पागलपन।

बावली स्त्री. (तद्.) दे. बावड़ी।

बाशऊर वि. (फा.+अर.) सभ्याचार सहित, सभ्य, सुसंस्कृत, शिष्ट।

बाशिंदा वि. (फा.) रहने वाला, निवासी।

बासंतिक पुं. (तत्.) वसंत से संबंधित, या होने वाला, वासंती (सुषमा)।

बास पुं. (तद्.) 1. रहने का स्थान, आवास, निवास 2. कपड़ा, वस्त्र स्त्री. 3. कामना, वासना 4. सुगंध, महक 5. आग 6. अस्त्र, तेज धार के अस्त्र।

बासठ वि. (तत्.) साठ से दो अधिक की संख्या।

बासन पुं. (तद्.) पात्र, बर्तन, भाजन।

बासमती पुं. (तद्.) एक प्रकार का सुगंधित चावल जो पकने पर भी सुगंध देता है, देहरादून का प्रसिद्ध उत्कृष्ट बासमती चावल।

बासर पुं. (तद्.) 1. दिवस, दिन, समय 2. आवास, आलय, गेह 3. आनंद, सुख।

बासव पुं. (तत्.) इंद्र।

बासा पुं. (तद्.) 1. आवास, निवास, रहने की जगह, पड़ाव, स्थान 2. गंध, महक 3. पर्युषित अन्न, रखा हुआ बासी अन्न 4. पुराना रखा हुआ फूल, भोजन।

बासी वि. (तद्.) 1. एक दिन या रात का पका रखा भोजन 2. किसी भी पहले से रखी, पर्युषित वस्तु में विशेषण रूप में प्रयुक्त शब्द 3. सूखा, कुम्हलाया मुहा. बासी कढ़ी में उबाल आना-बुढ़ापे में जवानी का जोश आना, असमर्थ होते हुए भी समर्थ की तरह होना; बासी-तिबासी- कई दिनों का रखा खाना; बासी-मुँह- प्रातः काल के समय में बिना कुछ खाए पिए।

बाहर क्रि.वि. (तद्.) किसी देश/सीमा या मर्यादा, क्षेत्र, स्थान, विस्तार आदि से हटकर या दूर, विचार, आचरण, व्यवहार में अलग, किसी दूसरी जगह, अन्यत्र।

बाहरजामी वि. (तद्.) बहिर्यामी, बाह्ययामी, बाहर रहने वाला, हृदय के बाहर पूरे विश्व में व्याप्त, विश्व भर में व्याप्त परमात्मा, अवतारों में सगुण, साकार रूप राम, कृष्ण आदि।

बाहरी वि. (देश.) बाहर का, बाहर वाला, बाहर की ओर का, जो अपने देश, समाज, वर्ग, दल, संस्था आदि का न हो, पराया, गैर, अजनबी, ऊपरी।

बाहलफ क्रि.वि. (फा.+अर.) सौगंध, कसम के साथ, शपथ पूर्वक।

बाहला पुं. (देश.) धारा के रूप में बहने वाली वस्तु।

बाहा पुं. (देश.) बहना, पानी बहने की नहर, नाली आदि, कोल्हू का रस, तेल बहने के लिए बना छेद, नाव के डॉड से बँधी रस्सी।

बाहीक पुं. (तद्.) 1. वाहलीक, अफगानिस्तान के आधुनिक बलख का प्राचीन नाम 2. पंजाब की एक जाति या इस जाति का व्यक्ति।

बाहु पुं. (तत्.) भुजा, बाँह गणि. त्रिभुज आदि ज्यामितीय आकृतियों को बनाने वाली रेखाओं में से प्रत्येक रेखा, भुजा।

बाहु पाश पुं. (तत्.) दोनों भुजाएँ फैलाकर हथेलियाँ मिलाने से बना घेरा, आलिंगन के समय बाँहों की मुद्रा।

बाहुक पुं. (तत्.) 1. राजा नल का एक नाम, नकुल, बंदर 2. बाहु की पीड़ा वि. अधीन, आश्रित, तैरने वाला।

बाहुज पुं. (तत्.) (शास्त्रों के अनुसार ब्रह्मा की) बाहु से उत्पन्न, क्षत्रिय, तोता, जंगली तिल।

बाहुत्राण पुं. (तत्.) युद्ध में पहना जाने वाला हाथों का कवच या दस्ताना।

बाहुदंड पुं. (तत्.) दंड के समान बलिष्ठ भुजा, भुजदंड।

बाहुफलक पुं. (तत्.) कला. चित्रकार के द्वारा चित्र बनाने के समय रंगों को मिलाने की अंडाकार या